International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 26-10-2025, Accepted: 25-11-2025, Published: 10-12-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 50-58

उत्तराखण्ड राज्य के जौनसार–बावर क्षेत्र के लोक साहित्य का अध्ययन

डॉ० राजपाल सिंह चौहान
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, डॉ० शिवानन्द नौटियाल राजकीय महाविद्यालय वेदीखाल, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
भारत में लोकसाहित्य की परम्परा अत्यधिक प्राचीन है। संस्कृत में लोक साहित्य की उत्पत्ति एवं विकास की कथा बडी मनोरंजक है। सुदूर प्राचीन काल में किस प्रकार साहित्य का प्रचार हुआ और किस प्रकार वह भिन्न शताब्दियों से होकर आज भी अपनी स्थिति को बनाये हुए है। यह विषय नित्तांत विचारणीय एवं महत्त्वपूर्ण है। जौनसारी लोक साहित्य उस निर्मल दर्पण के समान है जिसमें जनता जनार्दन का अखिल तथा विराट स्वरूप पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बत है। जौनसार लोक साहित्य की निर्मल निर्झरिणी में अवगाहन कर केवल शरीर ही पवित्र नहीं होता है प्रत्युत आत्मा भी पूत और पावन बन जाती है इसलिए जौनसारी लोक साहित्य में जिस समाज का चित्रण किया है वह धर्मभीरू, स्वस्थ, सदाचारी एवं जन कल्याणकारी है। इसमें जिस नीति की प्रतिष्ठा की गयी है वह सवर्धा कल्याणकारी मार्ग की और ले जाने वाली स्वच्छ नदी के समान है इसलिए वह मंगलमय पद की पदर्शिका है, जौनसारी लोक साहित्य सम्पूर्ण संसार में शान्ति एवं प्रेम का सन्देश देता है।

मूल शब्दः लोकसाहित्य, प्राचीन परम्परा, संस्कृत, उत्पत्ति एवं विकास, साहित्य का प्रचार, जौनसारी लोक साहित्य

प्रस्तावना
जौनसार–बावर के उत्तर में हिमाचल प्रदेश तथा दक्षिण में उत्तर प्रदेश स्थित है तथा पूर्व में गढ़वाल क्षेत्र स्थित है। इसलिए जौनसार–बावर का साहित्य भी हिमाचल प्रदेश एंव गढ़वाली साहित्य की तरह अपनी एक अलग पहचान रखता है। जौनसारी लोक साहित्य में यथार्थवाद तथा आदर्शवाद का बड़ा ही सुन्दर सामजस्य उपलब्ध है। जौनसारी लोक साहित्य भी हिन्दी के अन्तर्गत आने वाले लोक साहित्य हिमांचली, गढ़वाली, हरियाणवी, बुन्देली, अवधी के समान ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसलिए जौनसारी लोक साहित्य को जन जीवन का दर्पण कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी। जौनसारी लोक साहित्य जनता के हृदय के उद्गार है। सर्वसाधारण लोग जो कुछ सोचते हैं और जिस विषय की अनुभूति करते हैं, वह ही उसका साहित्य बन जाता है। जौनसारी ग्रामीण जनता विभिन्न संस्कारों और ऋतुओं, त्यौहारों, पर्वों मेलों के अवसर पर गीत गा–गा कर अपना मनोरंजन करती है। कहानियां सुनाना उनके मन को बहलाने का प्रमुख साधन है। समय–समय पर चुभते हुए अनाउणें लोकोक्तियों तथा मुहावरों का प्रयोग करके जौनसारी जन अपने हृदयगत विचारों का उद्घाटन करते हैं तथा भुजाउणिया (पहेलिया) तो जौनसार–बावर के जीवन का एक आवश्यक अंग है।

जौनसारी लोक साहित्य में निम्नलिखित छः विधाएँ दृष्टिगोचर होती है
1. लोकगीत
2. लोक कथाएँ (अशा)
3. लोक गाथाएँ (हारुल)
4. लोक नाट्य (नॉच)
5. अनाउणे – मुहावरे एवं लोकोक्तियां
6. भुजाउणियां पहेनियां

लोक गीत
जौनसारी लोकगीत जनमत द्वारा विशेष परिस्थिति वश स्थल कर्म, संस्कार के समय हुई अनुभूतियों की सामूहिक अभिव्यक्ति है जो जौनसारी लोक साहित्य में लोक गीत ही दिनचार्या की वास्तविक भावनाओं का आलेख प्रस्तुत करता है। इस प्रकार जौनसारी लोकगीतों में लोक संस्कृति का सजीव चित्रण दृष्टिगोचर होता है। जौनसारी लोक साहित्य में जौनसार–बावर के लोक गीतों का अत्यन्त महत्व है, इसमें जौनसार–बावर के जीवन के सभी पहलुओं एव भिन्न–भिन्न परिवेश में मानव के भावनिक एवं शारीरिक सौन्दर्य का चित्रण लोकगीतों में सवर्धा दृष्टिगोचर होता है। जौनसारी लोकगीतों में सामूहिक चेतना तथा समयिक क्रान्तियों का दर्शन भी स्पष्ट दिखाई देता है। इस प्रकार लोकगीतों में मांसलता की धारा प्रवाहित हुई है।
लोकगीतों का बीज हमारे सबसे प्राचीन तथा पवित्र ग्रन्थ ऋग्वेद में पाया जाता है। प्राचीन साहित्य में जिन गाथाओं का उल्लेख स्थान–स्थान पर उपलब्ध होता है, वे ही लोक जीवन में लोकगीतों के पूर्व प्रतिनिधि हैं। पद्य या गीत के अर्थ में गाथा शब्द का प्रयोग ऋग्वेद क अनेक ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। जौनसारी लोक गीतों में जहां भाई–बहन, माता–पिता पति–पत्नी, माता–पुत्री के आदर्श चरित्र का चित्रण किया जाता है, तथा श्रृंगार एवं वीर रस से युक्त लोकगीत सम्पूर्ण विश्व को प्रेम एवं साधाना की प्रेरणा देते हैं। जौनसारी लोक साहित्य में लोकगीतों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। जनजीवन अपनी प्रचुरता एवं व्यापकता के कारण इनकी प्रधानता स्वभाविक है। इसलिए ये लोकगीत विभिन्न उत्सवों, ऋतुओं में गाये जाते हैं। जौनसारी गीतों का विभाजन निम्नवत् है–
जौनसारी लोक गीतों का वर्गीकरण: सरकार सम्मन्नी गीत धार्मिक देवी देवताओं के गीत, रसानुभूति के गीत, ऋतुओं एवं उत्लाबी, मेलों से सम्बन्धित गीत, गोडावणा सम्बन्धी श्रमगीत, मागलगीत, पौराणिक गीत, एतिहासिक गीत आदि प्रचलित है

लोक कथाएं
जौनासर लोक साहित्य में लोक कथाओं का अपना एक विशिष्ट स्थान है। ये अपनी सरसता एवं लोकप्रियता के कारण अपनी एक अलग पहचान बनाये रखती है। बूढ़े–बुजुर्ग एंव बड़े सदस्यों एव माताएं अपने बच्चों को अच्छी–अच्छी कहानिया सुनाकर उन्हें आनन्द प्रदान करती है, जिससे उनकी कल्पना एंव स्मरण शक्ति का विकास होता है और प्रातःकाल ही बच्चे पुनः अपने माता से कहानी सुनने का आग्रह करते हैं तथा उसे सुने बिना भोजन तक ग्रहण नहीं करते हैं। कल्पनाओं के आधार पर रचित कहानियों में रोचकता बनी रहती है। इन कहानियों को यदि लिखा जाए तो पठनीयता का गुण समाहित हो कसता है, क्योंकि ये कहानियां

यहां के जनजीवन के पहलुओं पर आधारित है। लोककथा शब्द अग्रेजी के 'फोक टेल' शब्द का ही पर्यायवाची है तथा हिन्दी अनुवाद है। जौनसारी लोक कथाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कल्पनाओं का बहुत अधिक प्रयोग हुआ है।
लोक कथाओं की परम्पराओं को मूल स्रोत विद्वानों ने वेदों में देखा है। यह पूर्णतः सत्य है कि लोक कथाओं का प्राचीन रूप हमें ऋग्वेद में देखने को मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में भी उर्वश्री की कथा को प्राचीन कड़ी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। उपनिषद काल के बाद रामायण महाभारत काल के आख्यान से कथा की परम्परा प्राप्त होती है।

लोक गाथाएं
जौनसारी लोक गाथाओं का जौनसारी साहित्य में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। जौनसारी लोक गाथाओं को यहां के जन बोली में 'हारूल' कहा जाता है। इस प्रकार लोक गाथाएं मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित है –
1. टणकिया हारूल ।
2. सैवी हारूल ।
3. तान्दा हारूल ।

इसलिए जौनसारी लोक साहित्य के अन्तर्गत लोक गाथाओं की अनेक विशेषताएं दृष्टिगोचर होती है। इन विशेषताओं पर ध्यानाकर्षित करने से पता चलता है कि यह गीत (हारूल) लोकगाथा है। अलंकृत काव्य नहीं ।
लोक गाथाओं की इन विशिष्टताओं को हम निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं–
1. इसमें रचियता अज्ञात होता है।
1. प्रामाणिक मूल पाठ का अभाव ।
2. स्थानीयता का प्रचर पुट तथा क्षेत्र विशेष का प्रभाव है।
3. संगीत और नृत्य का अभिन्न साहचर्य ।
4. ऐतिहासिक प्रसंगों पर आधारित है तथा इसमें जिज्ञासा की भावना अधिक है।
5. यह एक पीढी से दूसरी पीढ़ी तक कथन करती है। अर्थात् ये मूलतः मौखिक है, लिखित नहीं ।
6. अलंकृत शैली की अविद्यमानता एवं स्वाभाविक प्रभाव ।
7. उपदेशात्मक प्रवृत्ति का पुट सर्वत्र परिलक्षित होता है।
8. रचिता के व्यक्तित्व का अभाव ।
9. लम्बा कथानक ।
10. टेक पदों की पुनरावृत्ति।
11. यह लोकगीत और लोक कथाओं का समन्वय रूप है।
12. इनमें गीतात्मकता एवं नाट्यभिनेयता विद्यमान होती है।

जौनसार लोक गाथा के कथावस्तु की ही प्रधानता है। देश के अन्य प्रान्तो में भी विभिन्न प्रकार की लोकगाथाएं मिलती है। उनमे वीर रस मुख्य है।
यथा श्मौल बाईरे नथे राम, देवला रे फेरी।
ऐजी आई गोई वे राजा साहिबा, हारूल रे तेरी।
इसके अतिरिक्त प्रेम गाथाएँ भी प्रचलित हैं, जिनमें मुख्य श्रृंगार रस की प्रधानता है।

जौनसारी लोकगाथाओं का वर्गीकरण
पौराणिक गाथाएं
ऐतिहासिक स्थानीय देवताओं की गाथाएं
कुटुम्बिक गाथाएं
प्रेम गाथाएं
वीर गाथाएं

इस प्रकार हम देखते है कि जौनसार लोक गाथाएं वास्तव में कथागीत ही है। इसमें जो कथा होती है. वह लोक जीवन से सम्बन्धित होती है। जौनसारी में नत्थराम, रणिया बोखाड, मासुदेवता की गाथा, सुनिया गरूड़, सिरपंच मोर सिंह टूडू वेणी, रावतों की बखाड आदि की लोक गाथाएं प्रमुख है। अनाउणें (मुहावरे–लोकोक्तिया) एवं मुजाउणिया (कहावते) जौनसारी लोक साहित्य में लोकगीत लोक कथाओं लोक गाथाओं के अलावा ऐसे भी मौखिक साहित्य प्राप्त होते हैं, जिसमें मुहावरे लोकोक्तिया (अनाउणे) एवं कहावतें (भुजाउणिया) जादू–टोने, छोडे, बाजू, जंगू, भारत आदि जैसे अनेक प्रकार का स्फुट लोक साहित्य बिखरा पड़ा है। अनाउणें (मुहावरें एवं लोकोक्तियां) तथा भुजाउणिया (कहावते) जौनसारी समाज में उसी प्रकार विशिष्ट स्थान रखती है। जिस प्रकार लोकगीत, लोक कथाएं एवं लोक गाथाएं अपना एक अलग महत्व रखती है। इनमें अनाउणे एवं मुजाउणियां का जौनसारी लोक साहित्य में स्थायी स्थान है। अनाउणे तो दैनिक जीवन में इतने व्याप्त है, कि इनके लिए प्रयास करने की आवश्यकता नहीं होती है। ये अपने आप ही स्वयं स्फूर्ति सहजरूप से प्रकट होते हैं।
जौनसार–बावर में ग्रामीण जनता अपने दैनिक व्यवहार में अनाउणो एवं भुजाउणियों का प्रयोग करती है। अनाउणों का प्रयोग अधिकांशतः बुजुर्ग एवं वृद्ध लोग अधिक करते हैं, लेकिन भुजाउणियां एक प्रकार से अनुभवों का खजाना होती है, जो मानव के बुद्धि को तीक्ष्ण एवं तार्किक शक्ति को बढाने में सहायता करती है। लोकोक्तियों को ज्ञान का सागर भी माना जा सकता है। वे जनसाधारण के सामान्य ज्ञान एवं सूक्ष्म निरीक्षण की परिचायिका भी है। इस प्रकार अनाउणों एवं भुजाउणियों की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। इससे भाषा बल आ जाता है और श्रोताओं के हृदय पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ जाती है। इसलिए जिस प्रकार हिन्दी साहित्य में ये विधायें सर्वत्र परिलक्षित होती है, उसी प्रकार जौनसारी साहित्य में ये विधाएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इसलिए अनाउणों (लोकोक्तियां–मुहावरे) साहित्य समाज का दर्पण है। इसमें हर काल का विशेष चित्रण हमेशा होता रहता है। समाज के रीति–रिवाजों, धार्मिक नैतिक परम्पराओं तथा जाति सम्बन्धी पारस्परिक सम्बन्धों का अर्थात् जीवन के सम्बद्ध बातों का उल्लेख अनाउणों में सरलता से मिलता है। जौनसारी अनाउणों (लोकोक्तियां मुहावरों) की विशेषताएँ इस प्रकार से हैं–
1. यह आकार में लघुत्तम होते हैं।
2. अनाउणों में लयात्मक अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकृत है।
3. अनुभवों के खजाने के रूप में इन्हें माना जा सकता है।
4. ये सरल शैली कारण बौधगम्य बन जाते हैं।
5. इसमें ज्ञान (बुद्धि) का विकास होता है।
6. यह मनोरंजन की त्रिवेणी है।
7. यह गद्य पद्य दोनों में उपलब्ध है।
8. ये प्रभावशाली एवं स्वीकृति की दृष्टि से भरपूर है।

जौनसारी – बावरी लोक साहित्य की प्रमुख विधाएं
लोकगीत: लोकगीत जौनसार–बावर क्षेत्र के श्रमसाध्य लोक जीवन की बहुरंगी झलकिया पूर्ण समग्रता के साथ प्रस्तुत करते हैं। घर आंगन से लेकर खेत खलियानों तक जन्म से लेकर मृत्यु तक लोक जीवन के सभी आयामों का उद्घाटन इस शोध प्रबन्ध में हुआ है। प्रकृति की विषमताओं में घिरे इस जनजातीय क्षेत्र के वासियों को जीवन यापन के लिए लगातार कठिन परिश्रम करना पड़ता है, इस दुःसाध्य खेतिहार, दिनचर्या से जब मी थोड़ा समय मिलता है, उनके लिए मनोरंजनार्थ और हसी–खुशी के क्षण केवल लोक गीत ही प्रदान करते हैं, जिससे उनके जीवन में समा बंध जाता है, जनजातीय क्षेत्र के मेले और त्यौहार, नृत्य और पर्व भी मनोरंजन की इस अदम्य भावना की अभिव्यक्ति है। साथ ही ये अवसर श्रम साध्य जौनसारी जनजाति क्षेत्र के पहाडी लोक जीवन को सरस और रोमोचक बनाने में सर्वथा सिद्ध हुए हैं। इन उत्सवों, पर्वो एवं त्यौहारों, विवाह एवं खेतों में कार्य आदि कोई

भी ऐसा अवसर नहीं है जिससे गीतों के बिना पूरा माना जा सके। लोकगीत इन सभी अवसरों के लिए अनिवार्य अभिव्यक्ति के साधन है। वस्तुतः लोकगीतों की अनिवार्यता यहीं तक सीमित हो अपितु लोक गीतों ने जौनसार–बावर के जनजीवन के प्रत्येक पक्ष पर अपना प्रभाव डाला है। जौनसार–बावर के जनजातीय क्षेत्र में विवाह और जन्म के अवसर पर मगल गीत गाये जाने की परम्परा आज भी दृष्टिगोचर होती है। यथा–

जसौ ले देइया ले परोत भामिणा,
भामणों को बेटा कुंगू लाअं पिठाई,
बाजगी को बेटा ले साई बजाअं बधाई।

मृत्यु के अवसादपूर्ण अवसर पर शोकगीत गाने की प्रथा भी प्रचलित थी । बडी–बूढी महिलाए रो–रो कर गीत गाकर विलाप करती थी, तथा अलग–अलग साज–बाज के साथ विशेष प्रकार के शोक गीतों का भी प्रचलन यहां सर्वत्र परिलक्षित होता है, जिसे 'हईलार' कहते हैं। अब मातम बनाने के पुराने के रिवाज बदल गये हैं, लेकिन वर्तमान में यह परम्पराएं लगभग–लगभग लुप्त प्राय होती जा रही है। जौनसार–बावर के अधिकांश गांवो में वर्तमान में इस परम्परा की इतिश्री हो चुकी है. कुछ पट्टी (खतों) या गांवो में यह परम्परा अभी भी प्रचलित है।

अतः लोकगीत यहां के जीवन से अलग केवल भावाभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है, अपितु स्वयं जीवन का एक अनिवार्य अंग है। लोकगीतों से अलग जौनसारी लोक जीवन के कल्पना ही सम्भव नहीं। वस्तुतः विषम और दुसाध्य प्राकृतिक परिस्थितियों में जीवन को गीतमय बनाने के लिए जितनी आवश्यकता यहां भोजन, पानी और हवा की है, उतनी ही आवश्यकता यहां मानसिक संतुलन के लिए लोकगीतों की है।
जौनसारी लोकगीत वस्तुतः लोकपरक है. इन गीतों में प्रयुक्त प्रतीक, उपमान, रूपक और बिम्ब विधान आदि और उनके द्वारा लोक भाषा में व्यंजित भाव लोक रूचि के अनुकूल ही अभिव्यक्त है। इन गीतों में लोक भावनाओं का सहज प्रतिपादन हुआ है। इसी कारण यहां का समाज इसे सहज ही स्वीकार कर लेता है। इस प्रकार जौनसारी गीत किसी व्यक्ति विशेष की भावभिव्यक्ति न होकर सम्पूर्ण समाज के सामूहिक मनोभावों का उद्घो षक लोक गीत बन गये हैं । जौनसारी लोकगीतों में रचियता का व्यक्तित्व गौण ही रहता है, चाहे अज्ञात भले ही हो। लोकगीतों के नित्यता और लोकप्रियता के गुणों का भी जौनसारी लोकगीत अवश्य ही दृष्टिगोचर होते हैं। यह गुण इसमें इसलिए सर्वथा परिलक्षित होते हैं, क्योंकि इसमें परिर्वतन और फेर बदल की सम्भावना सदैव विद्यमान रहती है, ताकि बदलती परिस्थितियों में भी वह अपनी सामयिकता कायम रख सके ।
जौनसारी लोकगीतों में नित्यता और लोकप्रियता के लिए सुनम्यता का मूलभूत गुण देखने को मिलता है। इस गुण के कारण ही स्थानीय बोलियां इन गीतो के लोकप्रियता के प्रसार में बाधक नहीं है। जौनसार–बावर ने बोलीगत वैषम्य इतना है कि कुछ ही कि०मी० की दूरी पर बोली में अन्तर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, जिसके कारण यहां के लोकगीतों में निहित, सहज लयात्मक और भावात्मक गुणों के कारण अर्थहीनता भी दृष्टिगोचर होती है, जौनसारी लोकगीत उसी प्रकार लोकप्रचलित है जिस प्रकार अन्य क्षेत्रों के गीत प्रचलित है। जौनसारी लोकगीत उसी प्रकार लोकप्रचलित है. जिस प्रकार अन्य क्षेत्रों के बीच प्रचलित है। जौनसार–बावर में दुखानत और सुखान्त दानों ही प्रकार के गीतों का प्रचलन है। जौनसार–बावर के गीतों में प्रेम–प्रसंग, घटनाओं एवं वहां अतीत के इतिहास ही गाथाओं एवं परम्पराओं पर आधारित अनेक प्रकार के सुन्दर गीतों से मन में एक कौतुहल सा उत्पन्न हो जाता है। जौनसारी लोकगीत यहां के जनजीवन की स्वच्छन्द और सहज रचनाएँ है। इनमें न तो किसी प्रकार की किलिष्ट दार्शनिकता का आग्रह है और न ही यह किसी विशेष विचारधारा का ही प्रतिपादन करते हैं। यहाँ के गीत मूलभूत मानवीय भावास्थितियों की सहज एवं स्वच्छन्द अभिव्यक्ति है, हर्ष–विषाद, सुख, दुःख, प्रेम. विरह आदि सभी भाव स्थितियां यहाँ के लोकगीततों में सहज प्रतीकों के माध्यम से मुखरित हुई है। जौनसारी लोकगीतों की रचना में सामूहिक भावना का योगदान भी सर्वत्र परिलक्षित होता है। उस भावना ने यहाँ के लोक जीवन के हर क्रिया–कलापों को प्रभावित किया। चाहे वह खेती का काम हो, चाहे घरेलू काम सहयोग की भावना यहां सर्वत्र ही परिलक्षित होती है। उदाहरण के लिए–

कौर बॉल ए, डांडी आमारी पाँणऊ बोल ए डाडी आमारी ।

जौनसारी लोकगीत जहां अपेन लयात्मक गुणों के लिए प्रसिद्ध एवं अद्वितीय है, वही इनका भाव अत्यन्त समृद्व. सुलभ एवं मार्मिक है। इन गीतों में भाषा सुलभएवं सहज प्रतीकों के माध्यम से कठिन से कठिन मावास्थिति को भी अति सहज ढंग से अभिव्यक्त करने की चमत्कारपूर्ण क्षमता है। जौनसार के लोकगीतों में अनेक नैसर्गिक माध्यम से जो भाव सबसे स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आया है, वह है रतिभव । एक प्राचीन गति रति भाव को इस प्रकार व्यक्त करता है–

तू लंका के जालो राजा, मेरो ले, रणं कइके सासा रावी मेरी ।

वस्तुतः रतिभाव ही जौनसारी लोकगीतों की प्राण संजीवनी है यहां प्रेम प्रसगों पर आधारित तथा वीर रस में प्रयुक्त गीतों को हारूल के रूप में गया जाता है। हारूल शब्द प्रेम के लिए की गई वीरता के परिप्रेक्ष्य का परिचायक है, वस्तुतः हारूले प्रायः वीर रस एवं ऐतिहासिक प्रसंगों पर आधारित है, जिनमें प्राचीनकाल की गाथाओं का सजीव चित्रण किया गया है। जैसे–

ढूंगऽपार बिजोरी ले, बिजोरी ल्याऽ ।
जाइना मेरो स्वामी ले, बिजोरी ल्या

इन हारूलों के अलावा रतिभाव अनेक प्रकार के विभिन्न स्थितियों में इन गीतों में संचारित हुआ है, यद्यपि रतिभाव एवं वीर रस (हारूलो) को हम जौनसारी लोकगीतों का आधार भी मान सकते हैं, इसमें कोई भी अतिश्योक्ति नहीं है। रतिभाव का पूर्ण निखार प्रेम सन्तुष्टि में नहीं परन्तु इसके अभाव से उद्भूत तडपन में है। जौनसारी लोकगीतों में विरह वेदना परदेश गये पति के वियोग में एवं प्रेमी–प्रेमिका के प्रसंगों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है–

तेरे आंखे बले आंखे बणे, मेरी आंखी के निय ।
तेरे आंखी के झलकारे, मेरे आंखी दे धीये ।।

जौनसारी–बावर के जितने भी श्रृंगारिक गीत है, उनमें रतिभाव विभिन्न रूपों से अभिव्यजित हुआ है, लेकिन वास्तव में इन लोकगीतों की शब्दावली में श्रृंगार रस उन्मुक्त और स्वच्छन्द रूप से प्रवाहित हुआ है। प्रकृति प्रेमी यहां के युवक एव युवतियां जब घाटियों, चोटियों एव खेतों आदि में अपने दिनचर्या पर निकलते हैं, तब यही रतिभाव मन में छिपायें, उन्हें रसमय जीवन प्रदान करता है। जौनसारी प्रणय गीतों में काव्यात्मक और संगीत तत्व गुण भी अन्य लोक गीतों की अपेक्षा अपनी पूर्ण आभा के साथ उभर कर सामने आये है। इन गीतों के प्रयुक्त अभिप्रायः प्रतीक, उपमान और रूपक अत्यन्त स्पष्ट, सहज और स्वाभाविक है। इसलिए अत्यन्त मुखर और प्रभावोत्पादक भी है। यह सर्वविदित है कि प्रेम की स्वच्छन्दता पर पर्याप्त सामाजिक बन्धन है. जिससे

उन्मुक्त प्रेम को एक अनुशासन की निर्धारिणी बनकर बहता होता है।
जौनसार–बावर में प्रणयगीतों में प्रयुक्त प्रेमालाप की अपनी विशिष्ट शैली व अनुष्ठान है। प्रणय गीतों में विप्रलम्भ, प्रतीक्षा और प्रणय और प्रणय की स्थितियां बड़े ही संवेदनशील ढंग से व्यजित हुई है।

कॉंडुडी को ताइता एबे की नठिए कदीं आंदी माईता ।

वस्तुतः जौनसारी लोकगीतों में पारम्परिक प्रतीकों का बहुविध तथा अतुलनीय भण्डार है, इसलिए यदि गागर में सागर भरने की युक्ति को इन गीतों से सीखें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह गीत जितने सीधे और सरल लगते हैं, उनका अन्तरंग उतना ही विशाल एवं व्यापक है। मानवानुभूति की सूक्ष्मति सूक्ष्म भावास्था की इन गीतों में अति सहज नैसर्गिक प्रतीकों के माध्यम से चमत्कारिक ढंग से अभिव्यंजित हुई है।

सलारी बोलमा मलारी दुयाए वाई एकुएं चीत एक्या के नेमा
घरबारी दुज्या को गाई देमा गीत ।

जौनसारी लोकगीतों में प्रयुक्त प्रतीकों का सुविधा के लिए नैसर्गिक परम्परागत पौराणिक और लाक्षिणक वर्गों में पहचाना जा सकता है। शारीरिक सौन्दर्य के लिए फूल एंव पेड–पौधों के स्तम्भ आदि की उपमा, लोकप्रिय रही है। आधुनिक युग में बदलते सामाजिक परिवेश में जौनसारी लोकगीतों में बदलाव मात्र उसके स्वरूप में हुआ है, लेकिन सौन्दर्य के लिए मोर, कोयल हंस हिरन एवं भंवर आदि जैविक प्रतीक भी लोकगीतों में उभर कर सामने आये है। उदाहरण–

तेरी हिरनी जैसी आँखे तेरी मोरनी जैसी चलऊ तेरी कोयलऊ
जैसी कूँ मेरे जीयदि बसी तू रूप तेरा कपास सी आटी ।
खोली दे खाबुडी, देखें तेरी धरमई सी दांदुसारी ।।

चांदनी, सूरज, बिजली, वर्षा आदि घाटियों और चोटियों आदि प्रकृति के सभी प्रतीयमान तत्त्व जौनसारी लोकगायक की भावनाओं को अभिव्यक्त करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। जौनसारी लोकगीतों में प्रतीकों का लाक्षणिक प्रयोग बड़ा ही सहज ढंग से ओर प्रभावोत्पादक है। विभिन्न भावास्थितियों को व्यक्त करने के लिए प्रतीकों का अभिलाक्षणिक प्रयोग कई गीतों में इतने साहित्यिक रचना से लोहा लेसकते है।

"देखीणं के अरजू कागीजौ सा बोजअ ।
गोराघाटी लाणी लाइना गौइडे का खोजअ ।।

जौनसारी लोकगीतों में रस तत्त्व के उपकरण स्थानीय स्थितियों में सामाजिक व्यवस्थाओं और मानसिक अनुभूतियों के अनुरूप ही परम्परित हुए है और इन्हीं उत्पादनों से प्रभावित प्रकृतिपरक, कल्पनापरक, समाजपरक और भावपरक अनुभव ही इन गीतों में रस के आधार भी इन चार आधार तत्त्वों के माध्यम से गीतों में रस का सहज संचारण हुआ है। जौनसारी लोकगीतों के काव्यात्मक और संगितिक पक्ष दोनों ही इनके अनुप्रमाणित हुए हैं। रतिभावं जौनसार–बावर के लोकगीतों में अपनी पूर्ण आभा के साथ अभिव्यजित हुआ है, इस मूल स्थायी भाव में व्यंजित होने पर श्रृंगार रस का निष्पादन लोकगीतों में मुक्त रूप से हुआ है। वियोग और संयोग तो श्रृंगार रस के सर्वमान्य प्रभेद हैं, परन्तु इन प्रभेदों से अलग भी श्रृंगार रस का एक स्थानीय रूप उभरा है, जिसमें न तो वियोग जनित विरह वेदना है और न ही संयोग की सन्तुष्टि है। श्रृंगार के इस स्थानीय रूप से यौवनोभंग पर आलम्बित कौतूहल सा रहता है। इसे हम केवल श्रृंगार कह सकते हैं। यौनाकर्षण से उद्वेलित युवक और युवतियां आकस्मिक आपसी कटाक्षों के आदान–प्रदान से यह लास्य स्थिति उदीप्त होती है, जो जौनसारी जीवन पद्धति से अनभिज्ञ हो, ये शायद इस अनुभूति का रसास्वादन न कर पाये परन्तु यहां मेलों, त्यौहारों में यही रस प्रवाहित होता है जौनसार–बावर में परम्परित लामड, हारूल तांदा, गोडवणों, झुडी, लिंका आदि स्वच्छन्द गीत इस प्रकार से है, जिसमें उन्मुक्त और मर्यादित गीतों का संचारण हुआ है।

उच्ची धारा पाण्डा लागा रेडियो, कौजे इस्कूल पुण्डी पढी, कौजे
सिखी गाला ऐढ़ियां गाड़ी आऊंदी दिल्लियों से दिल्लियों से तु
त चोरियें ऐसी डौर दी जैसा चूहा डौरो ला विल्लियों से ।।

इस प्रकार यहां जौनसारी गीतों में श्रृंगार और संयोग श्रृंगार वियोग श्रृंगार रस उपलब्ध है। वहीं पर इन्हीं में हास्य और करूण रस का भी सहज प्रस्फुटन हुआ है, अन्य रस गौण मात्र ही है। जौनसारी लोकगीतों में अनगिनत भाव–स्थितियों का निरूपण हुआ है, जिसमें इनमें अन्य रसों का निष्पादन हुआ है। देवर–भाभी की नोक–झोंक और जीजा–साली के सम्बन्धों पर आधारित गीतों में तो केवल श्रृंगार रस का रूप सामाजिक मर्यादाओं का भी उल्लंघन करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। जिस प्रकार साहित्य में श्रृंगार रस, रसो का राजा कहलाता है। उसी प्रकार जौनसारी गीतों में प्रेम रस अधिक लोकप्रिय रहा है। जौनसारी लोकगीतों की संगीत लहरियां प्राकृतिक पर्यावरण के साथ समस्वर रही है। यही कारण है कि जब यहां के लोग इन मादक स्वर लहरियों को छेड़ते हैं तो प्रकृति भी उनका साथ देती है. मानवस्वर घाटियों, चोटियों में यहां कोटि–कोट स्वरों में गूँजता उमड़ता सा लगता है। जौनसारी लोक साहित्य में लोकगीतों की धुनों में उद्‌द्भुत नैसर्गिक लोच है, जो सीधे श्रोता की भावनाओं को सम्पादित करती है। इनका स्वर माधुर्य तो यहां घाटियों चोटियों में असंख्य श्रुतियों और रागनि के रूप में बिखरा पड़ा है। लोकगीतों में तो इनका केवल स्वर लहरियों के रूप में मानव सुलभ सयोजन ही हुआ है ।
जौनसारी लोकगीतों में स्वर माधुर्य की बाट सम्भवतः प्रकृति ने भोगोलिक विषमताओं को संतुलित करने के लिए की है। जौनसारी लोकगीतों में वाद्य यन्त्रों का भी अत्यधिक महत्त्व है। ढोल, थमाऊ ढोलकी, रणसिंगा, करनाइयां, लकड़ी की उड़िया लोटा, खंजरी, ज्वर हुडकी आदि वाद्ययन्त्रों से जौनसारी लोकगीतों में चार चांद लग जाते हैं। जौनसार–बावर के लोकगीतों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है–प्रसंग विषयगत गीत भक्ति विषयगत ऋतु विषयगत गीत सस्कार विषयगत गीत आधारित गीत आते हैं। प्रसंग विषयगत गीतों में ऐतिहासिक प्रसंगों पर जिनमें सिरमोर तथा जौनासर–बावर के "हारूल" आदि आते हैं। यह जौनसार–बावर के इतिहास तथा हारजीत एवं युद्धो के प्रसगों पर आधारित लोक गाथाएं होती है, अनेक प्रेम प्रसंग भी इस प्रकार के गीतो में परम्परिक हुए हैं। नारियों एवं पुरुषों के बलिदान प्रसंगों को लेकर भी अनेक गीतों की रचना की गयी है। भक्ति विषयक गीतों में अनेक देवी–देवताओं एवं कुलादि देव महासू के गीत लोकप्रिय है। जागडे के अवसर पर कृष्ण एवं राम के भक्ति गीतों का भी काफी प्रचलन दृष्टिगोचर होता है। यहां पर खौडी, घोडे, परम्परित गीत नीतिपरक एवं उपदेशात्मक है।
ऋतु विषयगत गीतों में जौनसार–बावर समस्त पहाड़ी क्षेत्र माघ महीना तथा दिवाली जिसे स्थानीय भाषा में "दियाई" कहा जाता है तथा विवाह, उत्सवों एवं त्यौहारों, बिस्सू आदि में अनेक ऋतु–विषयगत गीतों का प्रचलन सर्वथा दृष्टिगोचर होता है। जौनसार–बावर में कुछ ऐसे गीत भी परम्परित हुए है जो किसी विशेष अवसर पर गाये जाते है। जैसे लकड़ी लाते समय (ढारना)

एवं क्यारियों की रोपणी करते समय तथा गोबर ले जाते समय (ढारना) खेतो में गोडावणा आदि के समय निम्न गीत गाया जाता है–

इनु नां गोडाउणी के तीसऽ बड़ी लागी,
जाइना मेरी बुआरिय पाणी ल्या भरी ।

संस्कार विषयक गीतों में जन्म से लेकर मृत्यु तक के समस्य संस्कारों के गीतों का प्रचलन है। जौनसार–बावर में विवाह संस्कार के शुभअवसर पर मगलगीत "जसो ले देया ले परौता बामिणा, बामिन कौ बेटा ले कंगू लावअ पिटाई, बाजगी कौ बेटा ले साई बजाऊ बधाई" एवं रात भर अन्य गीतों का प्रचलन तथा नृत्य आदि करने की परम्परा आज भी सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है, तथा अगले सुबह को रैणारात के रूप अन्तिम गीत गाकर समाप्त किया जाता है. इस प्रकार इस अवसर पर गाये जाने वाले गीतों को हम 'रैणारात' कह सकते हैं। उदाहरणार्थ –

"रैणा रातूडि ब्याई गोई, रैणारातुड़ी ब्याई गोई"

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि जौनसार–बावर के लोगों का धरती से रिश्ता उनका श्रमसाध्य जीवन और भेड़–बकरियां है। ये जौनसार जीवन की तीन अनविार्यतायें है। छोपती रखॉई और जौनसार–बावर में ही प्रचलित है. इनमें भी प्रेम, रूप और संवाद की त्रिवेणी रहती है, गढ़वाल में अन्यत्र इसका प्रचलन नहीं है। स्त्री–पुरूष इन गीतों को गाते हुए मस्त हो जाते हैं. इन्हें प्रेम रूप के प्रतीक होने के कारण इसे झमेलों में ही सम्मिलित किया है लामण भी गढ़वाल के रवॉई एवं जौनसार–बावर में ही गाये जाते हैं, ये प्रेम से ओत–प्रोत पर शैली और लय की भिन्नता के कारण ये छोपती से नहीं मिलते हैं, वैसे विषयवस्तु एक ही है।
अतः जौनसारी लोकगीतों में मांसलता का भाव उभर कर सामने आता है। लोकगीतों का विवेचन करने के पश्चात् यह बात ही स्पष्टतः सामने आई कि जौनसारी लोकगीतों में श्रृंगार रस का उद्घाटन अधिकांशतः हुआ है। श्रृंगार रस के दोनो भेद संयोग श्रृंगार एंव वियोग श्रृंगार के दर्शन जौनसारी लोकगीतों में स्पष्टता से दृष्टिगोचर होते हैं। इसके अतिरिक्त वीररस हास्यरस एवं कारण रस का उद्घाटन भी इन लोकगीतों में दिखायी पड़ता है तथा अन्य रस गौण मात्र ही रखे गये हैं। इसीलिए श्रृंगार रस को जौनसारी गीतों का प्राण भी माना गया है। इस प्रकार जौनसारी लोकगीत श्रम एवं साधना के गीत ही नहीं अपितु मनोरंजन के अभिव्यक्ति के भी गीत है। इन गीतों में धार्मिक, ऐतिहासिक आर्थिक, सामाजिक एवं भौगोलिक स्थितियों का भी यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है।

जौनसार बावरी की लोक कथाएँ

लोक साहित्य के अध्ययन में लोक कथाओं का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। लोक कथाओं के स्रोत विद्वानों ने वेदों में ही देखा है। लोक साहित्य में लोक कथाओं का सबसे प्राचीन रूप भी हमें पवित्र ग्रन्थ ऋग्वेद में ही प्राप्त होता है यद्यपि मानव के जन्म के साथ ही लोक कथाओं का भी प्रार्दुभाव हुआ है आदिकाल से लोक कथाओं का गठबन्धन मनुष्य की चेतना से चला आ रहा है। लोक कथाएं मौखिक रूप से ही प्राप्त होती है। इस प्रकार लोक कथाएं आदि काल से ही मानव जीवन का आवश्यक अंग रही है।
जौनसार–बावर लोक कथाएँ भी अत्यन्त प्राचीन है जब से जौनसार–बावर में सृष्टि का आरम्भ हुआ है तब से लोक कथाओं को कहने एवं सुनने की प्रथा जौनसार–बावर में प्रचलित रही हैं। यह बात नितांत सत्य है कि अभी तक इस पर पर्याप्त शोध एवं लेखन का कार्य नगण्य हुआ है। जिस प्रकार जौनसारी लोक साहित्य में लोक गीतों का स्थान महत्त्वपूर्ण है, उसी प्रकार लोक कथाएं भी जौनसार लोक कथाओं का अनुसंधान किया जाए और पता लगाया जाए कि लोक कथाओं का उद्भव एवं विकास किस प्रकार हुआ है तथा वे आज किस रूप में है उसका मूल रूप कैसा रहा होगा, तथा इसका तुलनात्मक अध्ययन अन्य लोक साहित्य के लोक कथाओं से किया जाए तो निश्चित रूप से किसी न किसी महत्त्वपूर्ण तथा पर पहुँचा जा सकता है।
जौनसारी लोक कथाओं की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसके कथानक लम्बे होते हैं। केवल मौखिक रूप से प्रचलित होने पर भी इसमें सरसता एवं रोचकता का गुण विद्यमान है। यदि इन्हें लिपिबद्ध विस्तृत रूप से किया जाए तो इसमें पठनीयता का गुण भी स्वतः प्रस्फूलित हो जायेगा। जौनसार की जितनी लोक कथाएँ अभी तक लिपिबद्ध की गई है उसमें पठनीयता का गुण भी विद्यमान है। इसलिए जौनसारी लोक कथाओं में पठनीयता एवं सरसता का गुण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इसमें जनजीवन के साथ कल्पना का भी समावेश होता है। ये पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से ही चली आ रही है। जौनसारी लोक कथाएँ गद्यात्मक है। इन लोक कथाओं में जौनसारी जनजीवन के विविध स्वरूपों का परिचय मिलता है इसमें जौनसार के नैसर्गिक प्रकृति वहां के स्थानीय लोगों दैवी–देवताओं तथा साँस्कृतिक गतिविधियों का यथार्थ निरूपण प्रतीत होता है। समाज के प्राचीन एवं वर्तमान विविध समस्याओं की सुन्दर व्याख्या समाधान तथा मानव जीवन के इतिहास का जीवन्त रूप इसमें दृष्टिगोचर होता है सितम्बर–अक्टूबर से लेकर जनवरी फरवरी तक किसानों एवं गांव वासियों के लिए खेती का कार्य अधिक नहीं रहता है। पशुओं के लिए धास–पत्ती का भण्डारण तथा खेती–बाड़ी के कार्यों से मुक्त होकर शीत काल में चौन से रहते हैं। सर्दी के दिन छोटे तथा राते बड़ी होती है। सर्दी में बर्फीली हवा चलने के कारण बच्चे बूढ़े और जवान सभी स्त्री–पुरुष अंगीठी या चूल्हें के पास बैठक मनोरजनार्थ एवं समय व्यतीत करने के लिए लोक कथाओं को कहने एव सुनने का समा बना लेते हैं। यही परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है या किसी चौपाल में बैठकर गांव के सभी लोग एकत्रित होकर कथाओं का आनन्द लेते थे लेकिन ये चौपाल वाली परम्परा अब समाप्त सी होती जा रही है। जौनसार–बावर में अगस्त से दिसम्बर तक मक्के के पत्ते तथा दाने निकालने का समय होता है इसमे लोक जीवन के सौहार्दपूर्ण एव सहयोग युक्त संस्कृति के दर्शन दृष्टिगोचर होते है। गायों के लोग मक्के को छिलने एवं दाने निकालने के लिए परस्पर एक दूसरे का सहयोग करते हैं इसी समय ज्यादा लोक कथाओं को सुनाया एव सुना जाता है। यह परम्परा आज भी जौनसार बावर के परगने में स्पष्ट रूप में देखने को मिलती है। किन्तु दूर दर्शन मोबाइल, संचार के साधना के कारण आदि का प्रचलन होने से आज यह परम्परा भी दम तोड़ती जा रही है। और पाश्चात्य हवाओं की अपसंस्कृति की ओर पलयान करती जा रही है। लोक कथाओं को सुनाने का जिम्मा परिवार या गांव के किसी वयोवृद्ध लोगों का होता है। समय के प्रहारों द्वारा व्यक्ति कुछ समय के लिए उम्र भेदभाव को भूलकर अपने बच्चों तथा नाती–पोतों के साथ बाल सुलभ उत्सुकता से ओत–प्रोत होकर गठन हो जाते हैं। कथा सुनाने वाला एक ऐसे संसर की कल्पना करता है। जिसमें सभी श्रोता मग्न होकर यथार्थ को भूलकर कल्पनाओं में विचरण करते हैं। लोक साहित्य की एक अन्य विधा लोक गाथाओं में तो जौनसार–बावर का सम्पूर्ण इतिहास निहित है। जौनसारी लोक जीवन में जिन वस्तुओं का अभाव रहा है। लोक कथाओं के माध्यम से उन सभी अभिलषित वस्तुओं का साभार एवं सजीव कल्पना का अभाव पूरा करने का प्रयास करती है। कल्पनाओं के इन ताने–बानों से ही जौनसारी लोक कथाओं का आकार विकसित हुआ है।

जौनसार लोक कथाओं का स्तर काफी उच्च कोटि का है। इसमें हास्य, उपदेशात्मक काल्पनिक वीर बहादुरों, दैवी–देवताओं तन्त्र मंत्र जादू टोने, एवं ऐतिहासिक प्रसंगों की कथा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें आंचलिकता का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। ऐतिहासिक प्रसंगों पर आधारित लोक कथाओं में नत्थराम नेगी, महासू देवताओं की लोक कथा हास्य एवं उपदेशात्मक लोक कथाओं सक्सेली की लोक कथा राक्षसों एवं राजा रानियों की कथाओं में सत्यता का गुण भी विद्यमान है। इसमें आदर्श एव यर्थात का मणिकाचन्न हुआ है। जिनका विस्तृत वर्णन आगे के अध्याय में किया जा रहा है। जौनसारी लोक कथाओं में अचल विशेष के अनुकूल जीवन के सभी आयामों का उद्घाटन सहजता से मिलता है। सामान्यतः खेतिहार दिनचर्या एवं थके व्यक्तित्व के अनुभवों रूपो का आदान प्रदान इन्हीं लोक कथाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। जौनसारी लोक कथाओं में कुछ हद तक घटनाओं दृष्यों स्थानों एवं परिस्थितियों का वर्णन सत्यता के निकट भी पाया जाता है। लोक मानस को उच्चता और श्रेष्ठता प्रदान करने क लिए हम कथाओं में चरित्र निर्माण, सहास, विकट परिस्थितियों में जीवन को उबारने वाले अनेक भाव रंग व्यक्त किए जाते हैं।

उपरोक्त विवेचन का सारांश यह है कि जौनसारी लोक कथाओं के विवेचन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जौनसारी लोक साहित्य में लोक कथाओं का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। जौनसार लोक कथाओं में कल्पनाओं का पुट अधिक है, लेकिन इसमें यथार्थ एवं सत्यता के गुणों का समावेश भी दृष्टिगोचर होता है। मानव जन्म के साथ ही लोक कथाओ का उद्भव हुआ है। लोगों में कहानी सुनने एवं कहानी कहने की परम्परा अत्यधिक प्राचीन है। अपने अनुभूतियों एवं ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को मानव ने कथओं के रूप में ही अभिव्यक्ति दी है। जौनसारी लोक कथाओं में जीवन में सुख–दुख रीति रिवाज आस्थायें, विश्वास परम्पराएँ अभिव्यक्त होती है। जौनसारी लोक कथाएँ केवल मौखिक रूप से ही उपलब्ध है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी एक वश से दूसरे वंश में चलती आ रही है। इसलिए इसमें अमूल–चूल परिवर्तन होता रहा है। जौनसारी लोक कथाओं का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन ही नहीं रहा है, लेकिन इसके साथ ही शिक्षा एवं उपदेश भी इसका मुख्य उद्देश्य रहा है।

जौनसारी लोक गाथाएं

वीरगाथाओं एंव प्रेम गाथाओं को जौनसार–बावर में हारूल कहा जाता है, अनेक दृष्टियों से ये महत्त्वपूर्ण हैं, इनमें जहाँ इतिहास की रंगबिरंगी झलकियां और कल्पना के इन्द्रधनुषी ताने–बाने मिलते हैं, वहीं पर शब्दों की जादूई चमत्कारिक उपमाओं का सुन्दर सौष्ठव एंव शैली का अद्भुत रूप मिलता है, अभिव्यंजना की दृष्टि से यह लौकिक गाथाएं अद्भुत है, अर्थात इनमें शब्दों का जादूई चमत्कार है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से इसकी अपनी एक एक विशेषता है।

हारूल के प्रकार

हारूलों को मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –
टणकिया हारूल
सैएर्वी हारूल
तान्दा हारूल

जौनसार–बावर में कुछ लोक गाथाएं इस प्रकार से है नत्थराम मलेथा की वीरगाथा, रणिया बखाड़ की वीरगाथा, सुनिया गरूड़ की तान्दा हारूल या गाथा केसरी चन्द की देशभक्ति गाथा, सिरपंच मोर सिहं की वीरगाथा, टून्डू वेणी एव रावतों की भखाड़ आदि वीरगाथा (हारूल) है, टणकिया गाथाओं में मुख्यतः रणिया बखाड, धारा दी फूल धूदली धासीण दी धानी, तथा तान्दा की हारूलों में मुख्यतः रणिया बखाड़, महासू देवता की हारूल, राजू स्याणा की हारूल, आनु की हारुल, सिगटेऊ और टेन्डीऊ की हारूल, सुनिया गरूड आदि की हारूले प्रचलित है। इस प्रकार जौनसार–बावर में अधिकांश वीर गाथाएं तथा प्रेम गाथाओं का प्रचलन आज भी सवत्रं दृष्टिगोचर होता है, लेकिन इनमें अधिकांश गाथाएं वीरगाथा ही है।

पौराणिक गाथाएं

जौनसार–बावर में देवताओं को नचाने की प्रथा आज भी सभी स्थानों पर देखने को मिलती है, किसी एक पर मासू देवता अवतरित होता है. तथा किसी पर सुकराड किसी पर कायलू और किसी पर काली अवतरित होती है। किसी पर मासू की ढोली यहाँ तक स्त्रियों पर आछरिया (परी या मात्रिया) अवतरित होती है, और वे खुले आम लोगों के बीच लोक–लाज को त्यागर नाचने लगती है। जौनसार–बावर में रात में जागरण कर कई दिनों तक देवता नचाने की प्रथा आज भी सवत्र ही दृष्टिगोचर होती है। अलग–अलग गाँवो में अलग त्यौहारों एवं उत्सवों तथा पर्वो पर देवता नचाने की प्रथा है। क्योंकि जौनसार–बावर पांडयों की स्थली मानी जाती है, इसलिए यहां पर किसी पर भीम किसी पर अर्जुन, किसी पर सहदेव, किसी पर नकुल आदि अवतरित होते हैं। महिलाओं में भी द्रोपदी, कुन्ती अवतरित होती है।

इन सभी के अवतरित होने के बाद इनकी एक प्रमुख विशेषता यह होती है कि ये सभी एक अलग प्रकार की भाषा पर प्रयोग करते हैं, जो केवल उन्हीं की समझ में आती है, जिन पर अवतार आया हुआ होता है। इन लोगों की एक और विशेषता यह है कि ये लोग आग से भी खेलते हैं। इसमें ढोल, धमाऊणी (डमरू डफली) रणसिंगा, करनाइयां शक आदि प्रमुख वाद्य यंत्र प्रयुक्त किये जाते हैं। जागर गीतों एवं वाद्य यंत्रों की ध्वनि संकेतों से देवताओं को नचाया जाता है, जिन व्यक्तियों पर देवता आते हैं, उन्हें औतारू कहा जाता है देवता अवरित होने पर व्यक्ति का सम्पूर्ण शरीर धीरे–धीरे कांपने लगता है, फिर उन्हें धी और गाय के दूध का धूप दिया जाता है, जिसमें चावल के दाने भी मिले हुए होते हैं। इनको शान्त करने के लिए पण्डित या मासू के माली एक मंत्र का उच्चारण करते हुए इनके माथे पर चावल का टीका लगाया जाता है, लेकिन हल्का सा कम्पन्न इनके शरीर पर यथावत ही रहता है। देवता नचाने के इस आयोजन को जौनसारी भाषा में 'मड़ाऊणा' कहा जाता है, अधिक रात तक यह आयोजन होता है। इसलिए इसे जागरण भी कहा जाता है।

जौनसारी लोक नाट्य या नृत्य

लोक नाट्य लोक एंव नाट्य का संयुक्त रूप है। लोक शब्द द्वारा जो जनसमूह हमारे सामने आते हैं, और उसकी कृति जब नाट्य रूप में कथोपकथन के माध्यम से किसी कथावस्तु को उपस्थिति करती है। तो उसे लोक नाट्य कहते हैं। लोक नाट्य की भाषा सीधी एव सरल होने के कारण अनपढ़ लोग इसमें रात भर रस ले सकते हैं। लोकनाट्य भारत में भिन्न–भिन्न प्रदेशों भिन्न–भिन्न संज्ञा से सुसज्जित है। इस प्रकार सभी वर्गों के मनोरजन के लिए ऋग्वेद से पाठ्य सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय और अर्थवेद से रस लेकर बह्मा ने नाट्य वेद की सृष्टि की।

जग्राह पाठ्य ऋग्वेदान्त सामश्योगितमेव च ।
यजुर्वेदादभिनयान रसमथार्वणादपि ।।

जौनसारी जन जातीय क्षेत्र के लोक नाट्य की गति में क्रमशः सौम्यता एंव द्रुत गति है, इसलिए जौनसारी लोक नाटय मन्द गति से काफी देर तक चलते रहते है। शादियों आदि में पूरी रात भर लोकगीत के साथ लोक नाट्य की परम्परा आज भी सर्वत्र परिलक्षित होती है। इन लोक नाटय के संगीत एंव वाद्ययंत्रों का होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

इसलिए जौनसारी जन–जीवन में संगीत की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। संगीत यहां के भू–भौतिक परिस्थितियों एंव नैसर्गिक पर्यावरण के अनुरूप बहुरंगी धाराओं मे प्रवाहित हुआ है, इसलिए इस जनजाजीय एवं हिमाच्छादित खण्डों से पोषित असंख्य जल रश्मियों नादपूर्ण जल तो प्रपात्रों एवं वेगमय नदी का रूप ले लिया है। यहां का संगीत ताल प्रधान है वाद्ययंत्र जौनसारी नाट्य के प्राणस्वरूप है। वाद्य यंत्रों के माधुर्य को सुनने वाले के पैरों में सहज ही थिरकन पैदा हो जाती है। लोकनाट्य के रस में डूबकर मग्न होकर ये लोग नृत्य के आमोद–प्रमोद में खो जाते हैं। इन लोक नाट्य में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्रों में ढोल, धमाऊणी लकड़ी के उडे. करनाई, नगारे, रणसिंगा ढोलकी, खंजरी आदि का प्रयोग किया जाता है इन वाघयंत्रों को गीत की आवाज से मिलाकर लयात्मक धुन उत्पन्न की जाती है, जिसमें ताल की गति बनी रहती है तथा लम्बे अन्तराल तक चलने वाले नृत्य या नाट्क मे जब कभी लय को बदला जाता है तो वाद्ययंत्रों पर चोट कम करके उसके लय में परिर्वतन किया जाता है। नृत्य विलम्बित लय में आ जाता है, जिसमें नयी ताल आरम्भ हो जाती है. इसमें वाद्य कलाकर एवं नर्तक बदलते रहते है. किन्तु नाट्य व्यवधानमुक्त चलता रहता है, इसलिए नाट्य चिरगामी है।

जौनसारी लोक साहित्य की यह सबसे अन्नत विधा है। इसलिए जौनसारी लोक कलाओं में नृत्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होने के कारण यहा अनेक गीत भी इन्हीं के नाम से पहचाने जा सकते है। इसी कारण अधिकांश गीत ताल प्रधान है। इसकी धुने एवं लय से समस्त जौनसार–बावर का वातावरण ही नहीं कलामय हो जाता है, अपितु एक स्वप्न की अनुभूति भी प्रदान करता है। जौनसारी जनजातिय क्षेत्र में लोकनाटय गीत के बिना पूरा नहीं माना जा सकता है। इसलिए अधिकांश नाट्यगीत के साथ ही संपंन किये जाते है। जौनसार लोक साहित्य में रासो गीतों के साथ रासो नाट्य भी परम्परित हुए हैं। इस नाट्य को दो–चार या छः सात महिलाएं मिलकर दीपावली या विशेष पर्वों पर करती है। इसके अतिरिक्त नाट्य स्त्रियां एवं पुरूष अलग–अलग पंक्तियों में खड़े होकर करते हैं। इस प्रकार जौनसारी लोकगीतों में नाट्य को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है –

1. एकल नाट्य ।
2. युगल नाट्य ।
3. सामूहिक नाट्य ।

एकल नाट्य में उन नृत्यों को वर्गीकृत किया जा सकता है, जिनमें सामान्यतः एक ही नर्तक होता। अन्य कलाकार केवल ताल एवं स्वर प्रदान करते है। इस प्रकार घेरे में बैठकर अन्य कलाकार बारी–बारी से अपने कला का प्रदर्शन करते हैं। युगल नृत्य में दो व्यक्ति तलवारे या लकड़ी के डंडे लेकर वाद्य यंत्रों की लय एवं घुन के साथ अनेक दाव–पेचों का रोमांचक प्रदर्शन करते हैं। इसे स्थानीय बोली में जंगबाजी या युगल नाटी कहा जाता है। युगल नृत्य में थौरूला एवं सुराई भी सम्मिलित है। अतः इस नृत्य में वीर रस की भावना अधिकांशतः दृष्टिगोचर होती है। इसके अतिरिक्त श्रृंरस प्रदान गीतों में रतिभाव का लक्षण भी सर्वत्र परिलक्षित होता है। सामूहिक नाटय या नृत्यों का विस्तृत रूप से सर्वाधिक प्रचलन है। अधिकांशतः सभी अवसरों पर सामूहिक नृत्य का ही प्रदर्शन होता है। विवाह एव पौड़ाइयों के अवसर पर एकल एवं युगल नृत्य के साथ सामूहिक नृत्यों का प्रचलन भी बहुत अधिक है। इन नाट्यों को हारूल, नाटी, घुटिया रासो, जाँता. धुमसू टणकिया तान्दा, आदि नामों से जाना जाता है। इसमें कुछ नृत्य केवल ऐसे हैं, जिसमें केवल महिलायें ही भाग लेती है, तथा कुछ नृत्य ऐसे भी हैं, जिसमें केवल पुरूष ही भाग लेते हैं। जैसे धुमसू छौडे जंगबाजी सराई, हंदया आदि में केवल पुरुष ही भाग लेते हैं। हंदया नृत्य में केवल नर्तक एक रस्सी के सहारे देवदार या बिमल की लकड़ी की मसाल कमर में बांधकर नृत्य करता है। मौड़ावणा नृत्य की अपेक्षा नाट्य प्रधान है, इनमें नर्तक पॉडवों की भूमिकाओं का महाभारत के कथानक पर आधारित गीत पर अभिनय करते हैं। अधिकांशतः जौनसार–बावर में स्त्रियां एवं पुरुष अलग–अलग पॅक्तियों में नृत्य करते हैं। इन लोक नाट्यों में हारूल, तान्दा गीत एव झेला, धीई, आण्डे–काण्डे आदि प्रमुख है। एक महत्त्वपूर्ण नाट्य विधा जिसे वहां के साधारण बोली में बुढ़ियात कहा जाता है। यह नाट्य निम्न जाति के लोगों द्वारा किया जाता है। इसमें सूर एंव कबीर का रहस्यवाद सर्वत्र परिलक्षित होता है जौनसार–बावर जनजातीय क्षेत्र के सामूहिक नृत्यों की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें एक मुख्य होता है जिसके अनुसार पद संचालन किया जाता है। इस प्रकार लोक नाट्य को हम तीन प्रकार से पहचान सकते हैं–

1. सामान्य लोकनृत्य।
2. सामयिक लोक नाट्य ।
3. अनुष्ठानित लोक नाट्य ।

सामान्य लोक नाट्य किसी भी समय किसी भी स्थान पर प्रस्तुत किये जा सकते हैं। सामानय लोक नाट्य मेले, विवाह एवं त्यौहारों के कोई भी अवसरों पर उपयुक्त होते हैं। जौनसार–बावर में लोक नाट्य सदाबहार लोक नृत्य है। इसी प्रकार सामयिक लोक नृत्य जन्म एवं विवाह तथा शुभ अवसरों पर विशु आदि त्यौहारों में देखे जा सकते हैं। जौनसार–बावर में रासों, झेंता, हारूले एक लोक गीतो को अवसर पर देखे जाते हैं। इसी प्रकार अनुष्ठानिक लोकनृत्यों में जौनसार–बावर में देवता नचाने की प्रथा भी महत्त्वपूर्ण है। इसमें मनुष्य के मध्य भाग से देवता नाचता है। इस नृत्य को (द्रोणी) मड़ावणा, भी कहा जाता है।

जौनसारी लोक नाट्य में जहां उनके लयात्मक गुणों एवं सौम्य स्वभाव के कारण सहज आकर्षण है, वहां उनके प्रयुक्त बहुरंगी वस्त्राभूषण एवं सज्जा परिधानों ने इनके बाडा कलेवर को अधिक कलात्मक एव दैवीय बना दिया है। यहां पर प्रत्येक क्षेत्र में नृत्य के लिए अलग–अलग परिधान है। पुरुषों का पहनावा सामान्य सौम्य रहता है, जिसमें सूती एवं सादे वस्त्रों में जगेल, जुड़ा, पायजामा, कुर्ता चौड़ा, कोट सलुका, कमीज एवं सिर पर गोल या तिकोनी टोपी आदि हैं। नाट्य करते समय चौड़ा एवं जुड़ा पहनने की परंपरा आज भी सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। नारियों का पहनावा और सज्जा अलंकरण यहां पर सामान्य अवसरों पर भी काफी रोचक एवं आकर्षणयुक्त रहता है। उन्हें नृत्य के लिए विशेष सज्जा की आवश्यकता नहीं रहती है। महिलाओं में परिधान में डान्दू कमीज (जग्गा) कुरती, घाघरा एवं आभूषणों में उतराइयों, बुलॉक, तुंगल, झूमके, बुन्दे, बालिया नाथ, फूली, कण्ठी, ताबील, बिड़ कग्यूते, धाग्यूले, चूडा, चूडिया मुरकी, सनुतियां आदि है।

इसलिए उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट पता चलता है कि लोक नाट्य एवं जौनसार जनजीवन का आपस में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। अटूट उत्सवों, मेलों. त्यौहारों तथा मांगलिक कार्यों के समय इसका अभिनय किया जाता है। रामलीला का प्रचलन भी जौनसार–बावर में काफी प्राचीन है। इसके अलावा जौनसार–बावर के लोक नाट्य की एक अन्य विधा, जिसको स्थानीय भाषा में बुढ़ियात कहा जाता है। यह सबसे प्राचीन है। इसे निम्न जाति के पुरूष ही विशेष त्यौहारों के अवसर पर खश राजपूतों के घर में या गाँव के स्यानों के आंगन में लेकर जाते हैं, लेकिन धीरे–धीरे इस नाट्य विधा का अन्त होता जा रहा है। अब कुछ गाँवो में अभी प्रचलन में है। एक अन्य लोक नाट्य की विधा धूमसू है। यह जौनसार–बावर के अधिकांश गाँवो में देखने को मिलता है। एक एनी नाट्य विधा हरिन भी है जो महासू देवता के जागड़े पर्व में देखने को मिलता है इसके अतिरिक्त दीपावली

के विशेष अवसर पर हठी नृत्य भी प्रचलित है जिसमे एक व्यक्ति हठी पर बैठ कर तलवार बाजी करते हुए नृत्य करता है
इसके अलावा देवता की नर्तकियों का नृत्य भी लोक नाट्य की अत्यन्त महत्वपूर्ण विधा है। जौनसार–बावर में लोक नाट्य देखने की परम्परा युगों–युगों से चली आ रही है। लोकनाट्य में शिक्षा मनोरजन, सभ्यता एवं संस्कृति का योग रहता है। विचारों के प्रचार एवं प्रसार के लिए यही एक सशक्त विज्ञापन की धरोहर हमेशा रहा है, क्योंकि मनोरंजन के अलग–अलग साधनों में लोकनाट्य अत्यन्त लोकप्रिय रहा है। जौनसार–बावर में लोकनाट्य क्रमशः सौम्यता एवं द्रुत गति है। जौनसारी लोक नाट्य में जहां तथ्यात्मक गुणों एंव सौम्य स्वभाव के कारण सहज एवं आकर्षक है. वहीं उनके प्रयुक्त बहुरंगी वस्त्राभुषण एवं सज्जा परिधानों ने इसके कलेवर को अति कलात्मक एवं दैवीय बना दिया है। इसलिए तो कथानक लोक मानस भी कृति है। ये मौखिक है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमे व्यक्ति की पूजा नहीं होती है। यह एक प्रकार की आंचलिक सामाजिक, साँस्कृतिक, एकता है। ये लोकनाट्य गीति प्रधानता है। इसमें वाद्ययंत्रों का उपयोग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

अनाउणें (मुहावरे–लोकोत्तियां)

सृष्टि के आरम्भ से ही जब मनुष्य की विकास यात्रा का शुभारम्भ हुआ. भाषा (बोली) उसका मुख्य अवयव एवं सर्वसुलभ माध्यम रहा है। अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए मनुष्य की भाषाश्रित होना पड़ा। भाषा बिना उसकी व समाज की विकास गाथा न कंद्रण अव्यक्त रह जाती है, अपितु यह गूंगापन उसे अपनी बात समझाने के लिए कथा दूसरे से कहने व दूसरे की बात ग्रहण करने में एक बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न करता है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है. यहाँ अनेक भाषांए अनेक बोलियां बोली जाती हैं। इसलिए कहा गया है कि "कोस कोस पर पानी बदले सात कोस पर बानी' बोली–भाषा के इन विविध माना स्वरूपों में उत्तर प्रदेश के उत्तराचल राज्य में स्थित जनजातीय क्षेत्र जौनसार–बावर अपनी समृद्ध और मौलिक संस्कृति की अनमोल किरालत के लिए इतिहास में प्रसिद्ध है।
महाभारत काल से जुड़े जौनसार–बावर के लोग स्वयं को पांडवों के वंशज जानते हैं। भगवान शिव के कैलाश पर्वतवासी जौनसारी लोग शैवमत के प्रबल अनुयायी है। शैवमत के आलोक में पल्लवित पुष्पित और फलित इस देवभूमि की इस देद संस्कृति की सॉस सॉस में शिव शक्ति की अनुगूँज धडकती रहती है। समूचा जौनसार–बावर क्षेत्र पांडवों की लीलास्थली होने के कारण यहां पॉडयों के सखा श्रीकृष्ण का भी क्रम महत्व नहीं है। उनके प्रति भी अटूट आस्था एवं विश्वास यहां के जनजीवन में व्याप्त है। अतः शैव एवं वैष्णव मतों के मतावलम्बी जौनसारी वन से ही सरल सौम्य व कांतिवान छवि के धनी है। कुलाधिदेव महासू यहां के लोक जीवन की संचायिनी शक्ति के सम्वाहक है। महादू के प्रति अमित–नमित यह सम्पूर्ण क्षेत्र भक्ति भाव से श्रद्धावनत हैं, जनसंख्या कम होते हुए भी यह एक विशाल भौगोलिक भू–भाग पर बसा हुआ है, परन्तु अपनी अलग सस्कृतिक पहचान के लिए यह देश भर में विख्यात है।
देश–जाति की और समाज की वास्तविक पहचान उसकी साहित्य, कला और सस्कृति द्वारा होती है। साहित्य कला और संस्कृति के साथ ही उस समाज का क्रमिक विकास गतिवान होता है। इस सबके लिए भाषा का सहारा लेना पड़ता है। भाषा हमारी सम्पूर्ण विकास यात्रा को अभिव्यक्ति देती है और जन–जन तक पहुंचाती है।
यद्यपि जौनसार–बावर की अपनी एक प्राचीन लिपि है जो कतिपय कारणों से प्रचलन में नहीं आ सकी। ब्राह्मणों के ज्योतिष ग्रन्थों में कैद होकर रह गयी। यदि इसलिपि का विकास और प्रचलन बढ़ाया जाता है तो वर्तनी और उच्चारण की समस्याओं से सहज ही निजात मिल जाता और जौनसारी बोली का सही उच्चारण के साथ प्रचार–प्रसार और प्रयोग होता है ।
वर्तमान में अनेक बोलियां (क्षेत्रीय) की तरह जौनसारी को भी देवनागरी लिपि में लिखने और पढ़ने की प्रतिबन्धित आवश्यकता है। इसलिए जौनसारी बोली को देवनागरी लिपि में लिखा गया है, क्योंकि हिन्दी का विशेष रूप से हिन्दी भाषी क्षेत्रों में व्यापक प्रयोग है। लिखने–पढने बोलने में हिन्दी ही सर्व सुलभ और सर्वोपयोगी माध्यम है। सामाजिक जीवन में लोक साहित्य के महत्त्व को नकारना अत्यन्त कठिन है। संसार का प्रत्येक साहित्य और उस साहित्य से सम्बन्धित भाषा, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से लोक साहित्य से प्रभावित है। लोक साहित्य में लोकाभिव्यक्ति जितने रूप है, उनमें अनाउणें (मुहावरे तथा लोकाक्तिया) की प्रबलतम अनुभूति को सरल, सहज रूप से व्यक्त करते हैं। हिन्दी साहित्य में जो महत्व मुहावरों का एवं लोकोक्तियों का है। जौनसारी बोली में वही कार्य अनाउणे का है। भाषा को प्रांजल और अर्थ सम्मत बनाने के लिए अनाउणों का प्रयोग होता है। कुछ अनाउणें तो हिन्दी के मुहावरों से सीधा साम्य रखते हैं। कुछ महत्वपूर्ण अनाउणों का हिन्दी के साथ साम्य निम्नलिखित है –
उपरोक्त विवेचन का साराश यह है कि जौनसारी लोक साहित्य में लोकगीतो गाथाएँ, कथाओं, लोकनाट्य के अलावा ऐसा भी भीषिक साहित्य प्राप्त होता है, जिसमें अनाजणे, भुजाजणियां आदि का लोक साहित्य बिखरा पड़ा हुआ है। जैसा कि मैं पहले भी उल्लेख कर चुका हूं कि जौनसारी लोक साहित्य काफी विस्तार का विषय है। इसके अनुसंधान करने की बहुत आवश्यकता है। अनाउगों का प्रयोग अधिकतर बुजुर्ग लोक अधिक करते हैं, इसलिए अपने एक लम्बे अनुभवों को बुजुर्ग लोग अनाउणों के रूप प्रयोग करते हैं। इसलिए अनाउणों एक प्रकार से अनुभवों का खजाना है अनाउणे ज्ञान सागर है। अनाउणें किसी एक व्यक्ति की उक्ति नहीं होती है, अपितु ये अलग–अलग प्रसंगों पर कही गई लोगों के अनुभवजन्य सुभाषित है। ये आकार में काफी छोटी होती है, लेकिन इसका प्रभाव अत्यन्त व्यापक होता है। जौनसारी अनाउणें का समाज के लिए बहुत बड़ा योगदान रहा है। विशेषतः अत्याचार एंव भ्रष्टाचार एवं चोरी अन्याय आदि के सन्दम्र में आज की नयी पीढ़ी को चेतावनी दी है। व्यवहार शून्य लोगों को दक्ष बनाने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अनाउणों ने कटाक्ष, तीखा प्रहार कर समाज को सुधारने का प्रयास किया है।
वस्तुतः संक्षिप्त सारांश यह है कि लोकोत्तियों एवं मुहावरों को जौनसारी भाषा में अनाउणें कहा जाता है, इसमें जन–जीवन की स्पष्ट और सत्य झांकी देखने को मिलती हैं सामाजिक प्रथाएँ, रूढ़िया परम्पराओं का उल्लेख भी अनाउणों में दृष्टिगोचर होता है। इन अनाउणों में आचार–विचार तथा शकुन अपशकुन सम्बन्धी धारणएँ मिलती है।

भुजाणियां (पहेलियाँ)

हिन्दी साहित्य में पहेलियाँ का अपना अलग महत्व है। पहेलियाँ बुद्धि को तीक्ष्ण और सोच को पैना करती है, जिस प्रकार पहेलियां का पूर्व लिखित कोई साहित्य नहीं होता है, बुद्धिबल नई–नई पहेलियाँ बना ली जाती है। ठीक उसी प्रकार पहेलियों को जौनसारी बोली में "भुजाउणियां' कहा जाता है। भुजाउणर्णी का यदि संधि विच्छेद करें तो भुज आंउणी जिसका अर्थ होता है, यह बात जो अनेक प्रकारान्तरों को पार करती हुई, मस्तिष्क में प्रवेश करती है। अर्थात 'बूजों तो जाने। इसी का नाम ही भुजाउणी हैं। भुजाजणी के द्वारा जीवन व जगत की कठिनतम परिस्थिति व स्थितियों को शब्द में पिरोकर, उसे अर्थवान बनाने का नाम ही भुजाउणीं (पहेली) है। जौनसार–बावर के लोक जीवन में भुजाउणी का बहुत बड़ा महत्त्व है, जो व्यक्ति जितनी

अधिक भुजाउणिया जानता है। वह अपनी कथन शैली से समाज में अपना विशिष्ट स्थान बना लेता है, तथा लोग मुग्धभाव से उसकी ओर देखते ही रह जाते हैं। जौनसार–बावर में कुछ प्रचलित भुजाउणियों का विचरण इस प्रकार से है

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है जौनसारी लोकसाहित्य में लोकगीतों का बहुत अत्यधिक महत्व है जौनसारी लोकगीत जनमत दवारा विशेष परिस्थितिवश स्थल कर्म संस्कार के समय हुई ऐसी अनुभूतियों की सामूहिक अभिव्यक्ति है जो जौनसारी साहित्य में दिनचर्या का वास्तविक भावनाओं का आलेख प्रस्तुत करता है। इसमें जौनसार–बावर के जीवन के सभी पहलुओं एवं भिन्न भित्र परिवेश में मानव के भावनिक एवं शारीरिक सौन्दर्य का चित्रण सहज ही परिलक्षित होता है। जौनसारी लोकगीतों में सामूहिक चेतना एवं समयिक क्रान्तियों का दिग्दर्शन होते हैं इन लोक गीतों में मांसलता की धारा अत्यधिक प्रवाहिव हुई है द्यनसारी लोक साहित्य में लोक कथाओं का अपना विशिष्ट स्थान है जौनसारी लोक कथाएं अपनी सरसता एक लोकप्रियता के कारण अपनी एक पृथक पहचान बनायें रखती है। जो जन मानस की स्मरण एवं कल्पना शक्ति की वृद्धि में अत्यन्त सहायक है कल्पनाओं का अधिक पुट होने कारण जौनसारी लोक कथाओं में रोचकता एवं जिज्ञासा बनी रहती है।

इसी प्रकार लोक जौनसारी लोक साहित्य में लोकगाथाएं भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है जौनसारी लोक गाथाएं वास्तव में कथा गीत ही है, जिसके कथानक बहुटत लम्बे होते है इसमें जो कथा होती है लोक जीवन से संबंधित होती है। लम्बे कथानक होने बावजूद भी इन गथाओं में रोचकता, मनोरंजन एवं गेयता बनी रहती है। जौनसारी लोक साहित्य में लोकगीतो, लोकगाथाओ, लोकनाट्य लोक कथाओं के अतिरिक अनाउणे (मुहावरे लोकोक्तियाँ) एवं भुजाउणियाँ (कहावते) चोडे, जंगू, बाजू, भारत आदि अनेक प्रकार का स्पूट लोक साहित्य बिखरा पड़ा हुआ है ये सभी विधाएं जौनसारी समाज में इसी प्रकार स्थान रखती है जिस प्रकार जौनसारी लोक गीत समाज में लोककथाएँ रखती है। अनाउणे तो दैनिक जीवन में इतने व्याप्त है कि इनके लिए प्रयास करने की आवशयकता नहीं पड़ती है ये अपने आप ही सहजता से सहज रूप में प्रकट होते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. उत्तराखण्ड का इतिहास शिव–प्रसाद डबराल खण्ड 2. पृष्ठ संख्या 93 आयुर्वेद पृष्ठ संख्या 4.9:20
2. उत्तरांचल का इतिहास शिव प्रसाद डबराल भाग–1 पृष्ठ संख्या 99 अथर्वेद पृष्ठ संख्या 4.9.104
3. उत्तराखण्ड का इतिहास शिवप्रसाद डबराल भाग १ पृष्ठ संख्या 96
4. उत्तराखण्ड का इतिहास–शिवप्रसाद डबराल भाग 1 पृष्ठ संख्या 98/99
5. उत्तराखण्ड का इतिहास शिवप्रसाद डबराल भाग 1 पृष्ठ संख्या 985
6. उत्तराखण्ड का इतिहास–शिवप्रसाद डबराल भाग 1 पृष्ठ संख्या 90
7. जौनसार–बावर दर्शन डी० आई० जी० जयवाल सिंह राणा पृष्ठ संख्या 509
8. जौनसार–बावर दर्शन डी० आई० जी० जयबाल सिंह राणा पृष्ठ संख्या 6010
9. जौनसार–बावर दर्शन डी० आई० जी० जयपाल सिंह राणा पृष्ठ संख्या 4. जौनसार–बावर दर्शन डी० आई० जी० जयपाल सिंह राणा पृष्ठ संख्या 1 111
10. जौनसार–बावर दर्शन डी० आई० जी० जयपाल सिंह राणा पृष्ठ संख्या 66
11. जौनसार–बावर दर्शन डी० आई० जी० जयपाल सिंह राणा
12. जौनसार–बावर दर्शन डी० आई० जी० जयपाल सिंह राणा पृष्ठ
13. जौनसार–बावर दर्शन डी० आई० जी० जयपाल सिंह राणा पृष्ठ संख्या 220
14. जौनसार–बावर दर्शन डी० आई० जी० जयपाल सिंह राणा पृष्ठ 220